जब लोग आपकी नकल करने लगे तो समझ ले कि आप सफल हो रहे है।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह

देहरादून मंगलवार 5 मई 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

अर्थव्यवस्था लहूलुहान हो जाएगी

दरअसल लोगों में असुरक्षा और अनिश्चिचतता का भाव घर कर गया है। उन्हें भय है कि सारा सिस्टम बैठ गया तो उनके पैसे डूब जाएंगे। इसी डर और आशंका ने कैपिटल मार्केट का भी बुरा हाल कर रखा है और इसका असर अब म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री पर भी दिखने लगा है।

भारती सिंह।

लॉकडाउन के दिन बीतने के साथ अब धीरे–धीरे यह साफ होता जा रहा है कि इसके कारण अर्थव्यवस्था के किन क्षेत्रों को कितना नुकसान पहुंचा है और इससे किस तरह की चुनौतियां पैदा हुई हैं। हाल तक सबको कुछ अंदाजा तो था कि लॉकडाउन से अर्थव्यवस्था लहूलुहान हो जाएगी, लेकिन कितने मोर्चों पर किस तरह के नुकसान सामने आ सकते हैं, यह अब पता चल रहा है। सबसे पहली मार सरकारी खजाने पर पड़ी है। राज्य सरकारों के हाथ खाली हो गए हैं और टैक्स वसूली लगभग ठप है।

पिछले दिनों केरल सरकार ने साफ कहा कि उसके पास अपने कर्मचारियों को तनख्वाह देने के पैसे भी नहीं हैं। राज्य के वित्त मंत्री थॉमस इसाक ने कहा कि 'अप्रैल में राज्य सरकार मात्र 250 करोड़ रुपये ही जुटा पाई। केंद्र से जीएसटी में राज्य का हिस्सा मिल जाए तो हम 2,000 करोड़ रुपये के बजट लक्ष्य को छूने में सक्षम होंगे। लेकिन वेतन के भुगतान के लिए हमें 2,500 करोड़ रुपये की आवश्यकता है, जो फिर भी पूरे नहीं पड़ेंगे।'अन्य कई राज्यों का भी यही हाल है।

रिसर्च फर्म इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च के अनुसार अगर लॉकडाउन 3 मई के बाद भी बढ़ा तो हिमाचल प्रदेश, झारखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश की वित्तीय हालत पतली हो सकती है। उसकी रिपोर्ट के मुताबिक राज्यों के अपने स्रोतों से आने वाले राजस्व की आमद न के बराबर हो गई है। इसलिए कई राज्यों ने पहले ही अपने कर्मचारियों के वेतन में कटौती कर दी है। इंडिया रेटिंग्स का मानना है कि केंद्र सरकार को भारी रकम जुटानी होगी और इसका बड़ा हिस्सा राज्यों को खर्च के लिए देना होगा।

सरकार की मुश्किल यह भी है कि लोगों ने पीएफ से पैसे निकालने शुरू कर दिए हैं। अप्रैल के शुरुआती 11 दिनों में 4 लाख से ज्यादा लोगों ने ईपीएफओ के पास 3 महीने की सैलरी निकालने का आवेदन डाला है। दरअसल लोगों में असुरक्षा और अनिश्चिचतता का भाव घर कर गया है। उन्हें भय है कि सारा सिस्टम बैठ गया तो उनके पैसे डूब जाएंगे। इसी डर और आशंका ने कैपिटल मार्केट का भी बुरा हाल कर रखा है और इसका असर अब म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री पर भी दिखने लगा है। जाने– माने म्यूचुअल फंड हाउस फ्रैंकलिन टेम्पलटन इंडिया ने घाटे के चलते अब अपने 6 डेट फंड बंद कर दिए हैं जिससे निवेशकों के करीब 28 हजार करोड़ रुपए अटक गए हैं। कंपनी का कहना है कि कोरोना संकट की वजह से लोगों ने तेजी से अपना पैसा निकाला है, जिससे उसके सामने नकदी का संकट पैदा हो गया है।

बिकवाली का दबाव बढ़ने से अब इन सभी फंड्स की सिक्युरिटीज सस्ते में बेचनी पड़ेंगी। कंपनी का कहना है कि निवेशकों को उनका पैसा वापस किया जाएगा, लेकिन कई चरणों में। कोरोना संकट के चलते दूसरे म्यूचुअल फंड्स पर भी दबाव बढ़ेगा। डेट फंड्स में नकदी का संकट बढ़ सकता है। गैर–बैंकिंग वित्तीय संस्थाओं के लिए बाजार से कर्ज उठाना मुश्किल रहेगा। केंद्र सरकार को इन सब पहलुओं का ध्यान रखते हुए आगे के कदम उठाने होंगे।

भरत का द्वंद

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।
आदिकवि महर्षि वाल्मीकि कृत महाकाव्य रामायण में सर्वाधिक द्वंदात्मक चरित्र श्रीराम के कनिष्ठ भ्राता भरत का है। महारानी कैकेयी के मस्तिष्क पर दासी मंथरा के कूट वचनों का तीव्र प्रभाव पड़ चुका है। कैकेयी राम के प्रति पूर्व में उपजे समस्त स्नेह से एकबारगी मानो विस्मृतिलोप की शिकार हो चुकी हों। उनकी अंतश्चेतना पुत्रमोह ग्रस्त होकर सिर्फ एक पुकार करती है कि राज्याधिकार तो भरत को ही प्राप्त होना चाहिए। उनके दग्ध ह्रदय से वेदना की असीम धारा फूट सी पड़ती है और फिर तो सांसारिक छ्ल का आश्रय लेने का वक्त आ गया।

माँ के पुत्रमोह के अतिरेक का आतंक स्वयं अपनी आँखों से देख भरत ह्रदय की गहराइयों तक विदीर्ण हो चुके हैं। बोधरहित निश्चेष्ट शरीर शैथिल्यमान है। एकटक दीवारों को निहारते भरत भविष्य की चिंता में डूब जाते हैं।

संपादकीय

आत्मनिर्भरता के लिए

कृषि को लाभप्रद बनाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता है। कृषकों के सशक्तीकरण के लिए नई कृषि नीति तैयार किए जाने और प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किए जाने की जरूरत है। आज जब किसान असंगठित हैं और उनकी आवाज अनसुनी रह जाती है, ऐसे में चार पी– पार्लियामेंट (संसद), पॉलिटिकल लीडर्स (राजनेता), पॉलिसी मेकर्स (नीति निर्माता) तथा प्रेस का दायित्व है कि वे उनकी अपेक्षाओं को स्वर दें, उनकी अपेक्षाओं के समर्थन में सकारात्मक माहौल बनाएं। ऋण माफी या अनुदान किसानों को अस्थायी राहत ही देते हैं। ये समस्या का दीर्घकालीन समाधान नहीं हैं। कृषकों को लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने के लिए, अल्पकालीन और दीर्घकालीन दोनों उपायों की आवश्यकता है। अन्य उपायों के अलावा, कृषि उत्पादों के देशव्यापी निर्बाध आवागमन को सुनिश्चित किया जाना चाहिए तथा व्यापक फसल बीमा योजना बनाई जानी चाहिए और उसे प्रभावी रूप से लागू भी किया जाना चाहिए। ई मार्केटिंग को प्रोत्साहित करने के अलावा कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं तथा रेफ्रिजरेटेड वाहनों से किसानों को बड़ी सहायता मिलेगी। चौबीस घंटे की निर्बाध विद्युत आपूर्ति और समय से सस्ता ऋण भी कृषि को फायदे का उद्यम बनाने के लिए आवश्यक हैं। इन उपायों को लागू करने से कृषि से बौद्धिक निर्वासन रोका जा सकता है तथा युवा भी कृषि को फायदे का व्यवसाय बनाने के लिए आकर्षित होंगे। मैं ग्रामीण भारत को कृषि संबंधी गतिविधियों की गहमागहमी से पूर्ण देखने की अपेक्षा रखता हूं। किसानों को सम्मान और कृषि को लाभप्रद मूल्य तभी मिल पाएगा। महामारी के इस दौर में विश्व आशा के साथ भारत की ओर देख रहा है।

खुद की चिंता किए बगैर देश के किसान ने न सिर्फ खेत में श्रम किया है बल्कि धान और खरीफ की अन्य फसलों की बुआई में वृद्धि भी की है। दलहन और तिलहन की बुआई का क्षेत्र भी विस्तृत हुआ है।

अन्नदाता का अभिनंदन करें

एम वेंकैया नायडू।

आज जब भारत कोविड–19 संक्रमण के अभूतपूर्व प्रकोप से जूझ रहा है, तब अदम्य साहस के साथ इस आपदा का सामना कर रहे हमारे अनजान योद्धाओं, हमारे किसानों का भी हम अभिनंदन करें। इस महामारी का मुकाबला करने में उनका सहयोग भी उतना ही अभिनंदनीय है जितना कि अग्रिम पंक्ति के हमारे अन्य योद्धाओं जैसे डॉक्टर, स्वास्थ्य, सुरक्षा और स्वच्छता कर्मी का। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत के किसानों ने सदैव जनता के हितों के लिए तथा हमारी खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित रखने में बढ़–चढ़ कर अग्रिम पंक्ति के योद्धा की भूमिका निभाई है।

कोविड–19 के संक्रमण से पैदा चुनौतियों के बावजूद उन्होंने साहस पूर्वक अपना कर्तव्य निभाया है और इस वर्ष 29.195 करोड़ टन खाद्यान्न का रिकॉर्ड उत्पादन किया है। और यह सब तब संभव हुआ है, जबकि संयुक्त राष्ट्र के खाद्य संगठन ने महामारी के कारण और संरक्षणवादी नीतियों की वजह से खाद्यान्न की विश्वव्यापी कमी होने की आशंका जताई थी। जैसे–जैसे विश्व शहरीकरण को ओर बढ़ रहा है, देश की बढ़ती आबादी की जरूरतों के लिए घरेलू खाद्य सुरक्षा पर ध्यान देना आवश्यक हो गया है। कृषि आज भी भारत की 60 प्रतिशत जनसंख्या की जीविका का मुख्य स्रोत है। हर क्षेत्र की भांति कृषि क्षेत्र भी महामारी से बुरी तरह प्रभावित हुआ है। खुद की चिंता किए बगैर देश के किसान ने न सिर्फ खेत में श्रम किया है बल्कि धान और खरीफ की अन्य फसलों की बुआई में वृद्धि भी की है। दलहन और तिलहन की बुआई का क्षेत्र भी विस्तृत हुआ है।

पूर्ण बंदी से कृषि संबंधी कार्यों को मुक्त रखने के कारण फसलों की कटाई का काम तथा आवश्यक उपकरणों की आपूर्ति भी युद्ध स्तर पर निर्बाध रूप से चल रही है। कुछ और कदम, जैसे राज्यों के बीच और राज्य में ही कृषि उपकरणों का निर्बाध आवागमन, पीएम किसान योजना के तहत किसानों को 2000 रुपये की पहली किस्त का भुगतान, मनरेगा के तहत दैनिक पारिश्रमिक को 182 से बढ़ा कर 202 रुपये किया जाना तथा सावधि कृषि ऋणों को लौटाने पर तीन महीने की राहत, ये कदम कुछ हद तक किसानों की हिम्मत जरूर बढ़ाएंगे। यह भी जरूरी है कि मजदूरों के अलावा सीमांत और छोटे किसानों को भी मनरेगा में शामिल किया जाए। सभी हितधारकों का साझा प्रयास होना चाहिए कि किसानों की आमदनी दोगुनी करने के लक्ष्य को प्राप्त किया जाए और कृषि को लाभकारी बनाया जाए।

मैं कृषि में संरचनात्मक बदलाव का पक्षधर रहा हूं ताकि इसे विषम परिस्थितियों में भी स्थायित्व प्रदान किया जा सके और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। चार आई– इरिगेशन (सिंचाई), इंफ्रास्ट्रक्चर, इन्वेस्टमेंट (निवेश), और इंश्योरेंस (बीमा) को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है ताकि कृषि का संपूर्ण विकास हो सके। किसानों की सहकारी संस्थाएं छोटे किसानों के छोटे और बिखरे खेतों को एकत्र कर, आधुनिक तकनीक की मदद से सघन खेती की दिशा में कारगर सिद्ध हो सकती हैं।

अष्टयोग-5039

	7	3	4		6	1
1	37		29	2	29	
6		5			4	
	38	4	29		29	
		1		7	2	3
7	33	2	32		37	
3			4	1	6	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है.खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5038 का हल

2	3	1	4	6	7	5
7	30	2	25	2	34	4
4	5	6	3	1	7	2
6	34	3	35	5	33	6
1	2	7	6	4	5	3
5	32	5	42	3	32	7
3	5	4	6	7	2	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग
केंद्रों को सक्रिय भूमिका निभानी होगी

मोहन। किसानों को मुर्गी पालन, डेयरी, मत्स्य पालन, रेशम कीट पालन, मधुमक्खी पालन, फूल और सब्जी उत्पादन जैसे कृषि संबंधी उद्यमों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए व्यापक संभावनाएं हैं। कृषकों और वैज्ञानिकों के बीच निरंतर संवाद रहना चाहिए जिससे कृषि को लाभकारी, पोषक तत्वों से युक्त और मौसम की अनिश्चितता से निरापद किया का सके। इसमें कृषि विश्वविद्यालयों और कृषि विज्ञान केंद्रों को सक्रिय भूमिका निभानी होगी। सामाजिक वानिकी किसानों की आय बढ़ाने का एक कारगर तरीका हो सकती है। यह पर्यावरणीय संतुलन को बहाल करेगी, मृदा क्षरण को रोकेगी और आय के वैकल्पिक साधन भी सुनिश्चित करेगी। हमें इस अवसर का लाभ उठाना है। कृषि को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे न केवल हमारी आत्मनिर्भरता सुदृढ़ होगी बल्कि हम अन्यं देशों को भी खाद्यान्न निर्यात कर सकेंगे और भारतीय अर्थव्यस्था को और शक्ति प्रदान कर सकेंगे।